अर्शिया रफ़ी

क़ल्ब -ए- अर्श

दिल की पुकार, अर्श की ओर

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Arshiya Rafi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-143-6

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: December 2025

क़ल्ब-ए-अर्श

इंतिसाब

अस्सलाम अलैकुम, मैं सईदा अर्शिया रफ़ी क़ादरी अल्लाह के करम से आज इस मुकाम पर हूं कि मेरी दूसरी किताब पाए तकमील को है तो मैं इसकी निस्बत अपनी हर उस मोहब्बत के नाम करती हूं जिन लोगों की मोहब्बत और दुआओं की वजह से मैं यहां तक पहुंची। फिर वो मेरे वालीदैन, मेरे भाई और बहन मेरे अज़ीज़ो आक़ारीब और मेरी दोस्तों के नाम और हर उस शख्स के नाम जो मेरे लिए मुख्लिस है यानी इंतिसाब मोहब्बत के नाम।

आप सबसे दुआओं की दरख़ास्त

मेरे हक़ में दुआ करें, अल्लाह मेरे लिए दुनिया और आख़िरत में कामयाबी और कामरानी अता करें... आमीन

सईदा अर्शिया रफ़ी क़ादरी

नज़्मउनवान ज़िन्दगी

अब ज़िन्दगी से जंग है हर कोई लड़ रहा
हर कोई चाहता है अमन ज़िन्दगी में हो
फैलाया जाल क्यों है ये फ़ितनो ने आजकल
इनसे मिले पनाह मगन ज़िन्दगी में हो

जिसको भी देखिए सही दिल का मरीज़ है
अब काश कोई हुब्बे वतन ज़िन्दगी में हो
मिलती रही जफ़ा ही जफ़ा ज़िन्दगी से क्यों
कोई तो अब वफ़ा का चमन ज़िन्दगी में हो
सर से सभी के छीन तो लेते हैं सब ही छत
सबके लिए ए काश गगन ज़िन्दगी में हो

औरत के एहतराम का जिसको हो ख़्याल अब
सबको नसीब अहले सुख़न ज़िन्दगी में हो
सबके लिए खड़े यहां अनजान लोग हों
अब अर्श ऐसा कोई चलन ज़िन्दगी में हो

ग़ज़ल

झूठ के क़ैदी कहां सच बोलते
लोग लहजे की सदाक़्त तोलते
जिनको रहता नफ़्स पर क़ाबू नहीं
हर जगह उनके क़दम ही डोलते
वो बताएंगे नहीं अब राज़े दिल
तो हक़ीक़त उनकी हम ही खोलते
क्या करम की वो नज़र उन पर होगी
जो यहां हर एक ही दिल टटोलते
उनको इंसानों का क्या हो पास जो
लहू मुकद्दस राहों में भी रोलते
अर्श इज़्ज़त उनको मिलती ही नहीं
जो ज़हर हर ज़िन्दगी में घोलते

नज़्म उनवान बेहीस दौर

जब क़ौम का मुहाफ़िज़ ही क़ातिल निकले
तो फिर क्यों न अक़ीदा ए बातिल निकले
जब दिल पुर्नूर न हो ईमान की रोशनी से
फिर हाथों में तीर की जगह पैरों में सलासिल निकले
कैसे आए नींद बुज़ुर्गो को इस दौर मे जहां
दौलत हर एक रिश्ते का मुतबादिल निकले
हो रहे हैं क़त्ल सरेआम और लोग चुप हैं यहां
क्यों हर बस्ती में बेहिस हर एक दिल निकले
छीन लेते हैं सुकून मां-बाप का बच्चे बुढ़ापे में
शायद ये उम्र भर की कमाई का हासिल निकले
जिस पे भरोसा कर सके हर कोई यहां आज कल
या ख़ुदा कोई तो हुक्मरान इस क़ाबिल निकले

ग़ज़ल

अब चाहिए नहीं मुझे कंगन, सुना तूने
दे सकता है तो दे नया बंधन, सुना तूने
सारे सितम जो सह के गुज़ारी है ज़िन्दगी
हर वक़्त रहती है नयी उलझन, सुना तूने
खेलूंगी मिट्टी और खिलौनो से मैं अगर
फिर आए लौटकर कहीं बचपन, सुना तूने
मैं चाहती हूं अक्स दिखे तुझ में और तू
बन जाना मेरी रूह का दर्पन, सुना तूने
बंजर ज़मीन दिल की है तुझको पता नहीं
शायद कभी नसीब हो सावन, सुना तूने
उस वक़्त रश्क करना मुकद्दर पे अपने तू
उतरेगी अर्श जब तेरे आंगन, सुना तूने

नज़्म उनवान इश्क़ की हक़ीक़त

तुम समझे नहीं इश्क़ की हक़ीक़त को
इश्क़ मे सिर्फ़ तनहाइयां नहीं होतीं
इश्क़ मिजाज़ी से हक़ीक़ी तक ये ले जाए
इश्क़ के मामले में सिर्फ़ रुसवाईयां नहीं होतीं
बेनूर आंखों को नूर भी ये देता है
हर वक़्त बेकली और बेचैनियां नहीं होतीं
इश्क़ ज़िन्दगी जीने का शहूर देता है
इश्क़ के सफ़र में सिर्फ़ वीरानियां नहीं होतीं
इश्क़ दिल की बंजर ज़मीन पे सुकून का एक लम्हा है
इश्क़ में हमेशा ही बेइमानियां नहीं होतीं

अर्श इश्क़ एक लाज़वाल जज़्बा है
इसमें डूब जाएं तो गहराइयां नहीं होतीं

ग़ज़ल

बाग़ ख़ुशफ़हमी का लगाना है

क्योंकि इसका ही अब ज़माना है

तुम मुझे देख लो अगर साहब

इश्क़ का रोग लग ही जाना है

जल गए ख़्वाब सारे तो क्या ग़म

फिर नए ख़्वाब अब सजाना है

तुम मुझे छोड़कर भले जाओ

मुझको तुमसे ही अब निभाना है

अर्श तुम टूटकर नहीं बिखरो

एक दिन सबसे छूट जाना है

नज़्म उनवान लड़की

सुनो ऐ कांच सी लड़की
तू सिंर्फ नाज़ुक है
किसी की बात में आकर
तू ख़ुद को भूल जाएगी
तेरे ख़्वाबों के सब जुगनू
तेरी पलकों पे ठहरे हैं
तेरे जज़्बों के सारे रंग
बहुत ही गहरे हैं
नहीं वाक़िफ़ है तू इनसे
यहां कई मकरू चेहरे हैं
बहुत तू ख़ूबसूरत है
तू मिट्टी की एक मूरत है
किसी के हाथ में जाकर
यकीन है टूट जाएगी
तेरी बेनियाज़ी ही
तुझको मार जाएगी
कोई गैबी ही ताकत फिर
तुझे सबसे बचाएगी

तू पर्दे में ही निकला कर

ना लोगों की तू परवाह कर

ख़ुदा की रहमत अगर

तुझसे रूठ जाएगी

तू सबसे छूट जाएगी

तू ख़ुद को भूल जाएगी

ग़ज़ल

बदले हैं ज़िन्दगी के वो हालात आजकल
रहती है मेरे साथ में वो ज़ात आजकल
जाने ये क्यों है लगता मुझे लोगों बेसबब
वो शख्स कर रहा है मेरी बात आजकल
फिर ऐसा ज़िन्दगी में कोई हादसा न हो
मैं मांगती दुआ ये हूं दिन रात आजकल
काटी है जिंदगी कोई मकसद तुझे मिला
दिल कर रहा है मुझसे सवालात आजकल
मै इप्तिदाए इश्क की वादी में हूं नहीं
है इंतहाए वज्द ख़यालात आजकल
मुर्शीद आपकी हो निगाहें करम इधर
तो हिंद में हो दर्स मसावात आजकल
मिट जाए इस जहां में मुनाफ़िक कोई न हो
करती है अर्श ये ही मुनाजात आजकल

नज़्म उनवान दिल

तू है भी मोहब्बत और मोहब्बत के क़ाबिल है

यानी दिल है

मेरी धड़कनों के साज़ में तू ही शामिल है

यानी

दिल है

तू जज़्बात की है तर्जुमानी

तू एहसास ए कामिल है यानी दिल है

तेरी आंखों मे क्यों है उदासी

छुपा इसमें लगता कोई बिस्मिल है

यानी दिल है

तू ही रास्ता है, तू ही मंज़िल है

यानी दिल है

तू ही दास्तान ए इश्क़

तू ही ज़ीस्त का हासिल है

यानी दिल है

ग़ज़ल

सीखूंगी मोहब्बत का मैं भी फ़न, उसे कहना
ये सच है ना समझे वो लड़कपन, उसे कहना
ये संभाल करके आज भी है रखा मैंने
दिए थे कभी जो उसने कंगन, उसे कहना
ऐ बादे सबा तू जा रही है शहर उसके
वो भेजें तरोताज़ा सा सावन, उसे कहना
नहीं चाहिए ये नेमतें इस जहां की अब
हां बन जाए बस मेरा वो दर्पन, उसे कहना
अभी है तलब गुड़िया-खिलौने-घरौंदे की
दे जाए मुझे फिर से वो बचपन, उसे कहना
यहां अर्श एक ताल्लुक़ ही बस चाहिए मुझको
वो दे ख़ूबसूरत एक बंधन, उसे कहना

नज़्म उनवान दिल की आवाज़

तुमको दिल की आवाज़ सुनाऊं
अगर कहो एक साज़ सुनाऊं
जिसको कहते हैं मोहब्बत
मैं उसके हर राज़ सुनाऊं
पहले सब कुछ प्यारा लगता
सुनो तुमको आग़ाज़ सुनाऊं
फिर दिल बोझल-बोझल रहता
मैं हर एक अंदाज़ सुनाऊं
फिर मिलती तन्हाई तोहफ़े में
इससे आगे क्या हम राज़ सुनाऊं
मोहब्बत के सब रंग बतलाए मैंने
क्या अब दास्तान-ए-मुमताज़ सुनाऊं

नज़्म उनवान झूठ

ये दिल है बेचारा झूठ
तुम मेरे हो ये इशारा झूठ
हमने मिलकर जो देखा था
वो हर एक नज़ारा झूठ
नहीं आता है यकीन अब तुझ पर
लो मैंने कहा दोबारा झूठ
कैसे मिलेगा मसीहा मुझको
मैं जिस पे हूं वो सैयारा झूठ
कहते हो तुम साथ हो हर पल
यानी मेरा हर एक ख़स्सारा झूठ

ग़ज़ल

तुम कहते हो मैं खंजर हूं
मैं अंदर से ही बंजर हूं
तुम कैसे ठहरोगे मुझ में
मैं तन्हाई हूं खंडहर हूं
है इस दिल में राज़ो का घर
शायद मैं तब ही नशतर हूं
तुम क्या जानो वहशत मेरी
मैं तुम्हारी कब हम सर हूं
मैं अब तक बाकी हूं कैसे
खुद से पूछती मैं अक्सर हूं

नज़्म उनवान चलो जीते हैं

चलो जीते हैं
उस दर्द को उस जुनूं को
सरहदों पे जो बहे उस लहू को
कुछ उम्मीदों के जज़ीरों पर
कुछ ख़ुशीयों के ज़ख़िरों पर
हम फूल वफ़ा के चुनते हैं
कुछ ख़्वाब अधूरे बुनते हैं
कहीं गिरते और संभलते ही
अपने ज़ख्मों को सीते हैं
चलो जीते हैं
कुछ नरमों नाज़ुक सी बेलें
जहां हम तितलियों से खेलें
झिलमिल तारों की रातों में
जुगनू को लेकर हाथों में
किसी दरिया के किनारे पर
एक बेचैन सैयारे पर
हम फूल बनकर खिलते हैं
चलो जीते हैं
हम हर मौसम की सख्ती को

अपने जिस्मों पर झेलेंगे

और तूफानों की थपेड़ों से

हम हंसते-हंसते खेलेंगे

बारिश की तन्हा रातों में

हम तन्हा भी रह लेंगे

कुछ लोगों से छुपाएंगे

कुछ अपने ख़ुदा से कह लेंगे

हम तन्हाई में अक्सर

अपने अश्कों को पीते हैं

चलो जीते हैं

ग़ज़ल

वो मुझसे तर्क ताल्लुक़ की अदा, अब पूछता है
कोई पूछे तो उससे कि वो क्या, अब पूछता है
सुनो मैं ज़िन्दगी भी वार देती उस पे लोगों
वो तो दिल तोड़ने की भी सज़ा, अब पूछता है
फ़क़त मांगा था मैंने उसको उससे ही मगर क्यों
वो मुझसे रंग दुनिया की मता, अब पूछता है

है इत्मीनान दिल को मेरे हर हालात में और
वो तो दिल तोड़ के मेरी रज़ा, अब पूछता है
ये नादानी का आलम देखो उसकी लोगों कि वो
भरी महफिल में ही अहदे वफ़ा, अब पूछता है
है मांगा अर्श उसको हर दुआ में रब से मैंने
वो मुझसे मांगनी है क्या दुआ, अब पूछता है

नज़्म उनवान मेरी हक़ीक़त

लोग कहते हैं मगरूर बेहिसाब हूं मैं
पर एक शख्स के लिए खुली किताब हूं मैं
जिसकी खुशबू भी किसी को मयस्सर ना हो
मेरी जान एक ऐसा गुलाब हूं मैं
तुम मिटाओगे मुझको कैसे जाना
जो कभी खत्म ना हो वो शबाब हूं मैं
मैं सुकून हूं बस किसी-किसी के लिए
खुद मुजस्सम ही एक इस्तिराब हूं मैं
कैसे जानोगे तुम मेरी शख्सियत को
खुद से पोशीदा हूं पर लाजवाब हूं मैं
तुम अर्श को हक़ीर हरगिज़ ना समझो
क्योंकि पहुंची हुई चीज़ आली जनाब हूं मैं

ग़ज़ल

वो एक शख्स ही तो बहुत काम का था
था बदनाम तो वो भी बस नाम का था
तू चल सकता तो था मेरे साथ में पर
ये मसला ही सारा तो आराम का था
मुहायदा तो ताल्लुक़ का तुझसे भी शायद
सुबह से लेकर बस यहां शाम का था
बिछड़ने का तो फैसला खुद से सुन लो
यहां पर मेरे दिले नाकाम का था
बुलाती तुझे आशियाने में कैसे
फ़क़त मामला सारा एहत्माम का था
उसे अर्श तू माफ़ कर सकती थी पर
इरादा तेरा भी तो इंतकाम का था

ग़ज़ल

बात ज़र्फ़-ज़र्फ़ की है चुप रहे गिला करे

सब्र की तलाश में वो मुझसे आँ मिला करे

ग़मे ज़िन्दगी तुझे कहूं मैं क्या तू है सज़ा

मुझे गर्ज़ ही नहीं यहां कोई भी क्या करे

मेरी उलझनों ने सोचने नहीं दिया मुझे

मेरे ख़्वाब सारे मिट गए कोई दुआ करे

बेरहम जहां में आम फ़िस्क औऱ फ़िजूर है

है कमाल इससे बचने का जो हौसला करे

तेरी जुर्रतों को है सलाम तू नहीं रुकी

अर्श है तमन्ना मेरी कोई तो वफ़ा करे

नज़्म उनवान दर्पन

मैं अक्स पिया तू दर्पन है
मैं दिल हूं अगर तू धड़कन है
हर सांस का तुझसे बंधन है
तू नहीं तो बेकल ये मन है
तू है तो पतझड़ सावन है
तेरे बिन अधूरा जीवन है
तुझ पर मैं हर जज़्बा भी वार दूं
तेरे संग सहरा में भी ज़िन्दगी गुज़ार दूं
तू कहे तो अपनी सांसे भी तुझे उधार दूं
यानी तुझे हर लम्हा प्यार ऐतबार इख़्तियार दूं
ये समझ तुझसे सांसों की एक डोर है
दिल में क्यों उठ रहा एक अजब शोर है
तेरी ख़ुशबू बस मेरे चारों ओर है
क्यों छाया मुझ पे हरदम तेरा सुरूर है
मेरे अंदर कुछ मुझसे ही मफ़रूर है
मुझको तेरे इश्क़ का गुरूर है
अब आ की तुझको एक तोहफ़ा दूं
तेरे क़दमों की ख़ाक को बोसा दूं
आ तुझ पर एक ग़ज़ल लिखूं

तू कह तो सही ताजमहल लिखूं

तुझे इश्क़ का ऐन, शीन, क़ाफ लिखूं
या फिर मैं एक दास्तान-ए-कोहकाफ लिखूं
तू इशारा मुझको कर दे अगर
मैं सारे लफ्ज़ों को पिरोकर
तेरी शान में एक दीवान लिखूं
तुझको लफ्ज़ों की जान लिखूं
ऐ काश मैं ऐसा कर जाऊं
तेरी दीद के बाद निखर जाऊं
मैं तुझ पर ही इनहिसार करूं
फिर आग का दरिया पार करूं
ये सोच के दिन अब गुज़रते हैं
मैं उसपे सब आशकार करुं

ग़ज़ल

तुम जाना चाहत हो मेरी
तुम ही अब अक़िदत हो मेरी
तुमसे शिकवा कैसे कर लूं
तुम दिल की हसरत हो मेरी
मैं तुमको चाहूंगी क्योंकि
तुम ही अब इज़्ज़त हो मेरी
मैंने तुमको छूकर देखा
तुम ही अब हक़ीक़त हो मेरी
खुद को आईने में देखूं
लगता तुम सूरत हो मेरी

ग़ज़ल

तेरे बिन अब गुज़ारा हो ही जाएगा

कोई तो अब हमारा हो ही जाएगा

हैं कई पेच-ओ-ख़म ज़िन्दगी में तो क्या

दिल मेरा अब तुम्हारा हो ही जाएगा

तेरी इस बज़्म में इल्म ये हो गया

हर सितम अब गवारा हो ही जाएगा

डूबी जिस वक़्त मैं जानती कैसे ये

मेरा भी एक किनारा हो ही जाएगा
कोई तो अब दिलासा मुझे दे सके
मेरा रोशन सितारा हो ही जाएगा
नाज़ था जिनको ख़ुद पर नहीं थी ख़बर
उनका दिल भी बेचारा हो ही जाएगा
ज़िन्दगी में तुझे चाहिए अर्श अब
एक रब का इशारा हो ही जाएगा

नज़्म उनवान हिज्र

तेरे हिज्र में जब फ़ना हो जाऊं
हर दर्द से मैं आशना हो जाऊं
हो जाए ज़िन्दगी में जब ग़म मुसलसल
दिल के मौसम भी जब जाएं बदल
तुझे क़सम है मेरी जाना
उस वक़्त मत आना, उस वक़्त मत आना
जब आंखें नम हो जाए
और सांस भी मेरी थम जाए
जब मुझ पे छाई उदासी हो
और रुह वस्ल की प्यासी हो
तुम कर देना कोई बहाना
उस वक़्त मत आना, उस वक़्त मत आना
जब आस के जुगनू बुझने लगे
और वक़्त की तितली उड़ने लगे
जब धड़कन मेरी रुकने लगे
जब लहू रगो में जमने लगे
जब मुझको हो दुनिया से जाना
उस वक़्त मत आना, उस वक़्त मत आना

ग़ज़ल

किसी को क्या उज़र देती तेरी मैं बेवफ़ाई का
तमाशा लग ही जाना था मेरी भी पारसाई का
नफ़ी जो ज़ात की अपनी हुई मातम तो हो उसका
नहीं मैं दोहराऊंगी ये क़िस्सा कज अदाई का
मेरे दिल की खराबी पर पशेमां हो तो वो क्यों हो
नहीं है दौर ये वाएज़ अभी जब पज़िराई का
जहां में मोहसिन है लाखों तेरा रुतबा है कुछ और
है रिश्ता तुझसे वाबस्ता मेरा तो दिलरुबाई का
अगर जो वक़्त पस्ती से बुलंदी पर पहुंचा दे
कभी दावा नहीं करना सुनो लोगों खुदाई का

नज़्म

नहीं यकीन है मुझको उसके वादों पर
मुझे दलील दे कोई तो फिर बात बने
हे गुबार आज भी उसके इरादों पर
ये छँट जाए तो शायद हालात बने
है कुर्बान हर सांस उसकी यादों पर
के उसका तसव्वुर ही मेरी हयात बने
मेरी निगाह उसके दिल के दरवाज़ों पर
तो वो कैसे ना मेरी कायनात बने

नज़्म उनवान हालात का ग़म

सुनो अच्छा नहीं होता है हयात का ग़म
ज़रा बताओ मुझे है तुम्हें किस बात का ग़म
तेरी दिल आज़ारी हुई है अगर मुझसे जनाब
मुझे रुलाएगा फिर तेरी ज़ात का ग़म
तुझे दर्द में देखूं तो तड़प ही जाऊं मैं
ख़ुदा किसी को भी ना दे हालात का ग़म
मैं खुश फ़हम हूं तो ख़ुदारा रहने दो
तुम्हें भी हो ही जाएगा कभी जज़्बात का ग़म
मैं इश्क़ में शराकत की मुंकिर हूं
वल्लाह नहीं चाहिए मुझे दिन-रात का ग़म

ग़ज़ल

तू कहे हाले दिल मैं बता भी दूंगी
अपनी मजबूरियां मैं सुना भी दूंगी
काम है बहते रहना लहर का मगर
तू अगर कह दे ख़ुद को बहा भी दूंगी
ठुकरा देगा मुझे इसलिए चुप हूं मैं
वरना राज़े मोहब्बत दिखा भी दूंगी
मेरे जज़्बात कमज़ोर समझे हो क्या
उम्र भर ख़ुद को मैं अब सुला भी दूंगी
तेरे जज़्बात की क़दर है मुझको सुन
एक दिन तो तुझे मैं वफा भी दूंगी

ग़ज़ल

क्यों दिया मुझको सहारे बेवजह
क्यों दिया है फिर इशारे बेवजह
इश्क में तो काम ही था सब्र का
मर गए सब ग़म के मारे बेवजह
बेकली हर वक़्त है और ज़िन्दगी
दे रही असबाक़ सारे बेवजह
आंख आंसू से मेरी नम है मुझे
तुम दिखाते हो नज़ारे बेवजह
वक़्त की करना कदर अब अर्श तुम
वरना होते हैं ख़स्सारे बेवजह

नज़्म उनवान मोहब्बत

तुझसे मोहब्बत अपनी जगह
और ये हक़ीक़त अपनी जगह
तेरी ज़िन्दगी मे बहुत शोर है
मेरी ज़िन्दगी का अजब दौर है
तुझे चाहिए ज़माने की फ़तूहात
मुझे चाहिए सुकून दिन-रात
अजब मामला है मेरा सनम
ये दिल है फिर भी तेरा सनम

ग़ज़ल

ये ख़ामोशी ग़नीमत अब है जाना
ये अंधेरा हक़ीक़त अब है जाना
मेरी वीरान आंखों में हमेशा
फ़क़त तेरी ही सूरत अब है जाना
ये दिन भी तो गुज़र जाएंगे सुन ले
तू कहना फिर ये रहमत अब है जाना
मुकद्दर में बिछड़ना हो अगर तो
समझना ये ही किस्मत अब है जाना

बिखर जाऊं तेरी फ़ुरक़त के ग़म में
नहीं आसान हिजरत अब है जाना
रुलाए जो जगह तुझको समझना
यहां पर अर्श-ए-तुरबत अब है जाना

नज़्म उनवान घर

एक छोटा सा घर
ठंडी रेत पर
जिस पर हो मेरे
ख़्वाबों की गुज़र
बस यही ख़्वाब था

ना शिकवा हो ना
शिकायत जहां
बस मोहब्बत सांस
लेती हो वहां
बस यही ख़्वाब था

मेरी उम्मीदों का
मेरे ख़्वाबों का घर
जो कभी खत्म ना हो
उन यादों का घर
बस यही ख़्वाब था

मैंने मांगी थी

जिसके लिए हर दुआ

बस यही ख़्वाब

मेरा ना पूरा हुआ

बस यही ख़्वाब था

आशार

नहीं उम्मीद वाबस्ता है तुझसे कोई मेरी
मैं मुद्दत से फ़क़त इश्के हक़ीक़ी अब तो चाहूं
वजूद तेरा है लाज़िम इस कदर मेरे लिए की
तेरे बिन मरते भी हैं और देखो मरते नहीं भी
अपने हाथों की लकीरों को पढ़ा है मैंने पर
एक तेरे साथ के सिवा है मिलता इसमें सब
मुझको रुसवा ना कर मैं इश्क का पैकर हूं
है तेरे हाथ में पत्थर तो इधर फूल भी है
तुम पूछते हो मुझसे ख़्वाहिश मेरी
वल्लाह बस दो गज़ ज़मीं और कुछ नहीं
अपने अंदर उतर अर्श एक बार तू
ख़ुद को देखा नहीं देखा फिर तूने क्या
जाने क्यों लोग मुझे ज़िंदा शुमार करते हैं
जबकि मैं मुद्दत से अपनी लाश उठाए हुए हूं

किस बात का गुरूर है तुझको मेरे हुज़ूर
सबको एक दिन आख़िर मिलना है ख़ाक में

है हौसला अगर तो मुझको क़ुबूल कर
वरना तो मुझसे किये वादे सारे फुज़ूल हैं

मैंने सोचा था वो दिल से नहीं उतरेगा कभी
लेकिन जो सोचूँ वो हो ये ज़रूरी तो नहीं

तू इश्क़ है
तशरी
इंतज़ार है
शिद्दत है
मगर फिर भी क़बूल है

वक़्त हर बार कहता है हंसकर मुझे
एक दिन वक़्त ये भी गुज़र जाएगा

मेरे ज़र्फ़ को तुम क्या समझोगे साहब
मैंने दिल का ख़ून करके भी माफ़ किया है सबको

वक़्त का चक्कर भी अजीब है सारा
दिल में उतरने वाले अक्सर दिल से उतर जाते हैं

तुमने पूछा था कभी मुझसे सब्र का मतलब
हो सके तो एक बार पढ़ लो आंखें मेरी
मसला ये नहीं कि तुझे मुझसे इश्क़ है
मसला तो ये है तेरी ज़रूरत है कोई और

क़ता

हमें पागल समझते हैं

ये दीवाना समझते हैं

हमारी बेबसी को अब तो

ये नज़राना समझते हैं

हमारी बुनियादों को ये अब

अपना ठिकाना समझते हैं

सियासतदान हमारी चीख

को गाना समझते हैं

क़ता

नासेह हराम शय का तू जब तज़किरा करे
तो कहना दिल भी तोड़ना मुतलक़ हराम है
कम ज़र्फ़ कम नसल का दे फ़तवा भी तू उसे
जिस शख्स के लिए ये तमाशा ही आम है

क़ता

ये दिन भी गुज़र जाएंगे ये आस है मुझको
है अब सामने दरिया मगर प्यास है मुझको
हूं बेबस तो तू मुझको बेहिस ना समझ जाना
तेरे हर मसाइल का भी एहसास है मुझको

क़ता

न खेलो इब्ने आदम बिन्ते हव्वा से
यहां उसका भी तो एक ही ख़ुदा है
तू अपनी बेटी देगा जब किसी को
तो क्या वो इस ज़माने से जुदा है

क़ता

तुम मुझे ले चलो उस जहां जाने जां
जिस जगह मैं रहूं तुम रहो और वफ़ा
मैं कहूं तुम सुनो दिल की अब दास्तां
ताकि हो ज़िन्दगी में शिफ़ा और दुआ

क़ता

सरे बाज़ार लोगों का तमाशा कौन करता है
फ़क़त नामे मोहब्बत पर हिरासा कौन करता है
मुझे अपनी निगाहों से कभी भी दूर न तू करना
बताओ इश्क की तजदीद मुझसा कौन करता है

क़ता

मोहब्बत इंतिहा पर हो तो अक़िदत हो ही जाती है
हिज्र का सामना हो फिर तो शिद्दत हो ही जाती है
कहीं करले किसी बेहीस का इंतिख़ाब फिर तो सुन
यहां अंधेरों मे रहने की आदत हो ही जाती है

क़ता

तुम मुझसे पूछते हो मेरी हद कहां तक है
मैं इश्क हूं और इश्क की कोई हद नहीं होती
तुम मेरे साथ मेरी दुआओं में हो शामिल
क्योंकि एहसास की कोई सरहद नहीं होती

क़ता

दिल के मामलात हो या नज़रों की बात हो
दोनों को सैराब फक़्त तू ही तू करे
जिसको मयस्सर हो जाए इश्क तेरा
वो किसी की फिर क्या आरज़ू करे

क़ता

वक़्त का काम है गुज़रना गुज़र ही जाएगा
लेकिन तब तक ये दिल भी मर ही जाएगा
मैं कब तक बसा के रखूंगी दिल में उसको
एक न एक दिन वो दिल से उतर ही जाएगा

क़ता

मोहब्बत का मतलब इबादत है जाना
तुम्हें और इसकी इस्तिलाह क्या बताऊं
सुनो तुम भी जाना ये सब को सुनाना
मोहब्बत की जो मैं फतह सुनाऊं

नज़्म उनवान इश्क

कुछ तुम बरहम हुए
कुछ हम बेरहम हुए
इस तरह ख़त्म हुई
अपनी दास्ताने इश्क
तुमको भी कोई मिल गया
और मेरा भी दिल बदल गया
यानी दिल में हो गया
एक कब्रिस्ताने इश्क
तुमको भी कोई ग़म नहीं
और इस दिल में कोई मौसम नहीं
तुम समझो बंजर हो गया
मेरा गुलिस्ताने इश्क
कुछ वक़्त का कसूर था
कुछ शामिल तेरा ग़ुरूर था
फिर मेरा दिल हो गया
अर्श का आस्ताने इश्क

ग़ज़ल

मुझे तुमसे जो है शिकायत सुनो
कभी आके उनको मिटाओ ज़रा
सभी आस के जुगनू हैं बुझ गए
तो तुम आके उनको जलाओ ज़रा
मुझे लम्स अपना भी तुम बख़्श दो
मेरी तिशनगी अब बुझाओ ज़रा
मुझे अब तो सुकून-ए-दिल चाहिए
कोई गीत मुझको सुनाओ ज़रा
भटकती हूं मैं अब यहां से वहां
मुझे राह अपनी दिखाओ ज़रा
मैं बस मांगती हूं दुआ इतनी तुम
मेरी ज़िन्दगी में आ जाओ ज़रा

नज़्म उनवान दोस्ती

मुझे याद आता है
वो बचपन वो सावन
वो घरौंदे वो आंगन
वो फूलों की वादी
वो गुड़िया की शादी
वो बातें इतनी सादी
हर एक बात पर रूठ जाना हमारा
ज़रा सी देर में मान जाना दोबारा
वो मोहल्ले की गलियां वो ख़ूबसूरत चौबारा
वो कॉलेज का ख़ूबसूरत ज़माना
दोस्तों की बातों पर आंसू बहाना
नहीं लौटकर है उन दिनों को अब आना

काश वो सारे दिन वापस आ जाएं
बचपन की सखियां फिर से मिल जाएं
ज़िन्दगी जीने का एक बार हम लुत्फ़ उठाएं
मेरी दुआ है मेरी सारी दोस्त जहां भी रहे
खुदा की हमेशा पनाह में रहे
नहीं कोई दुख दर्द वो सहे

मेरी तरफ से उनके लिए दुआ का नज़राना

पुर सुकून ज़िन्दगी उनकी देखें सारा ज़माना

बस ये इल्तिजा है तुम सब मुझे भूल न जाना

ग़ज़ल

इतनी ठहरी है कि ये रवां लगती है
ज़िन्दगी ग़म का एक कारवां लगती है
तू हकीकत नहीं पूछ उन ख़्वाबों की
जिनको देखूं तो सूली पे जां लगती है
मैं शिकायत नहीं करती तुझसे कोई
पर मेरी रूह अब नातवां लगती है
ये उम्र गुज़री है बेकली में मगर
आह अपनी किसी को कहां लगती है

नज़्म उनवान मेरी ज़िन्दगी में

मेरी ज़िन्दगी में तुम रहो
कोई और हो या ना हो
तुम्हें मुझसे इश्क है कहो
कोई और हो या ना हो
मेरी आंख में तेरे ख्वाब हों
कोई और हो या ना हो
मेरे दिल में बस तुम रहो
कोई और हो या ना हो

नज़्म

मैं तेरे दिल के करीब हूं
ये सच है या इत्तेफाक है
मुझे इतना तो बता दे ज़रा
मेरा दिल तोड़ना कोई मज़ाक है
मैं तुझसे आकर जल्द मिलूं
मुझे बस ये अब इश्तियाक है
मेरा मशगला तुझे चाहना जाना
ये मैंने पढ़े असबाक है

ग़ज़ल

तेरी तलाश एक मुसलसल सफर ही है
गुमनाम जिसको लगती हूं तेरी नज़र ही है
मुझको जवाज़ दे कोई तुझको भुलाने का
मैं जो तड़पती हूं तेरी जाना फिक्र ही है

है खौफ आज भी तुझे हमदम ज़माने का
दिल पर जो चलता है अभी तेरा असर ही है
दें शर्फ़ अपनें दीद का अब आखरी सही
ए रुह मन जहां पे हूँ तेरा शहर ही है
ये मेरी इस्तिराबी बताती हैं मुझको कि
है आज तक जो भी मुझ पे तेरा सहर ही है
जितना भी बेरुखी का दिखावा तू कर ले पर
है फिक्र तुझको इतनी ये मेरी क़दर ही है

नज़्म उनवान मुझे अब फर्क नहीं पड़ता

तुम मुझसे रूठ जाओ तो
कहीं पर छूट जाओ तो
सितम तुम पर हो कोई भी
और तुम टूट जाओ तो
मुझे अब फर्क नहीं पड़ता
तुम्हारी बेबसी से भी
तुम्हारी बेरुखी से भी
यकीन मानो तुम जाना
तुम्हारी मायूसी से भी
मुझे अब फर्क नहीं पड़ता
अगर तुम आ भी जाओ तो
मुझे अपना बनाओ तो
अपने नाम की मेहंदी
मुझको लगाओ तो
मुझे अब फर्क नहीं पड़ता

ग़ज़ल

दिल लाख मशवरा दे मोहब्बत नहीं तू कर
मुश्किल है दिल बहुत ये बग़ावत नहीं तू कर
हो जाए फिर भी इश्क किसी से परखना दिल
महबूब पर कभी भी इनायत नहीं तो कर
दुनिया से बेखबर है तो सुन ले ज़रा मेरी
इस बात की किसी से शिकायत नहीं तू कर
चलना है साथ में कभी सर्कश हुजूम के
हरगिज़ किसी से फिर तो रक़ाबत नहीं तू कर
हो जाए जो कभी तेरे गर्दिश में रात-दिन
उस वक़्त भी किसी पे क़नाअत नहीं तू कर
तू इन हिसार करना फ़कत रब की ज़ात पर
अब अर्श हर किसी की क़्यादत नहीं तू कर

नज़्म दिल की तबाही

एक ऐसा ही दिन था जब बर्बाद हुए थे हम जाना
उसी दिन दिए थे तूने हमको बेशुमार ग़म जाना
किसी और के लिए तूने किया था कत्ल मेरा
और संवारे थे किसी और की ज़ुल्फ़ों के पेच-ओ-ख़म जाना
तुझको मुबारक हो तेरी सारी खुशियां किसी और के साथ
मेरा क्या है मेरे लिए तो सिर्फ तेरे धोखे और सितम जाना

ग़ज़ल

इन वहशतों की दुनिया के हालात बदले हैं
हर लम्हा हर तरफ़ के ही ख़्यालात बदले हैं
कोई तो समझे दिल के ये मौसम हैं बदले क्यों
हर शख्स के ही दिल के तो जज़्बात बदले हैं
कोई तमाशबीन तमाशा यहां है सब
है वक़्त बदला, बदला सा दिन-रात बदले हैं
करती मैं सबकी रब से शिकायत यहां पे क्यों
सबकी यहां पे रूह के असरात बदले हैं
जाता है कोई कंधे पे और छोड़ने कोई
रुख़सत जो हुआ उसके निशानात बदले हैं

ग़ज़ल

आ देख तेरे वास्ते ही सिंगार है किया
हां मैंने फिर से ख़ुद को ही तैयार है किया
तू एक ही नज़र उठाकर देख ले मुझे
मैं कह सकूं तूने मेरा ऐतबार है किया
तूने कभी नहीं किया वादा कोई मगर
मैंने तो फिर भी तेरा ही इंतज़ार है किया
मैं कांटों पर भी रहूं तो अब चैन है मुझे
दिल को तेरी ही दीद ने गुलज़ार है किया
तू वस्ल की दे अर्श को उम्मीद तो कोई
तेरे हिज्र ने ग़म से ही दो चार है किया

नज़्म उनवान सुकूने क़ल्ब

मेरा मशगला तुझे चाहना
नहीं दूजा कोई काम है
तेरी मुस्कुराहट गिज़ा मेरी
तुझसे रोशन सुबह-शाम है
मैं तेरी फिराक में जब रहूं
वो वक़्त गर्दिशे अय्याम है
तू ही इस्तिराब मेरी जान है
तू ही दिल के लिए आराम है
मुझे जिंदगी से गर्ज़ क्या
मुझे फक़्त तुझसे ही काम है
तेरा इश्क मुझ पर हलाल हो
मुझे क्या फ़िक्र क्या हराम है
मुझे याद और कुछ नहीं
जो याद है वो तेरा नाम है
नहीं चाहिए दौलत दुनिया की
तेरा इश्क मेरी दवाम है

ग़ज़ल

मुझको अब तो ओक़ाब बनना है
सुन लो दिलकश सा ख़्वाब बनना है
इश्क है अपनी हर हक़ीक़त से
ये वजह ना सराब बनना है
जिसको सुनकर सुकून मिल जाए
मुझको ऐसा खिताब बनना है
मैं तलाशूंगी सब जवाबों को
मुझको अब लाजवाब बनना है
वो जो शाहीन अब इधर देखें
उनकी ख़ातिर अज़ाब बनना है
जिस पे सब रश्क कर सके पढ़कर
मुझको ऐसी किताब बनना है
सख़्त जंगल में कोई रास्ता हो
अपने वास्ते असबाब बनना है
आग जो इंकलाब की कर दे
वो चिंगारी जनाब बनना है
दर्द दो ना दवा करो मेरी
सख़्त अब बेहिसाब बनना है

ग़ज़ल

पता अब ज़िन्दगी का देते हैं तेरे शहर वाले
दवा हर दर्द की क्यों देते हैं तेरे शहर वाले
समझती हूं मैं खुद को आज भी पत्थर मगर फिर क्यों
बताते हैं मैं ज़िंदा हूं अभी तेरे शहर वाले
मैं आखिर इश्क की मेराज पर क्यों अर्श हूं अब तक
सज़ा इस बात की देते हैं क्यों तेरे शहर वाले

नज़्म उनवान ईद

ए काश की अब के ऐसा हो
मुझे तेरी दीद हो जाए
मैं चांद नहीं तुझको देखूं
और मेरी ईद हो जाए
मैं तेरे लिए सिंगार करूं
ताकि रस्मे उलफ़त की
तजदीद हो जाए
मैंने मांगा है ये दुआ जाना
तुझे मेरी तलब शदीद हो जाए

ग़ज़ल

नादान दिल तू सुन ज़रा एक काम करते हैं
अब ख़ास कोई हो तो उसे आम करते हैं
सुन लो बहुत है खेल मसीहाई का यहां
इस किस्से को अभी यही नाकाम करते हैं
मानो यकीन फ़र्क नहीं पड़ता डूबने से
कि जिसका नाम हो उसे बदनाम करते हैं
नासेह सुकूने क़ल्ब की मुझको दुआ ना दो
आओ किसी के चैन का इंतज़ाम करते हैं
कह दो उसे कि उसकी ज़रूरत नहीं रही
माज़ी को भूलने का ही तो एहतमाम करते हैं
सालों की है थकन मेरे आसाबो पर तो सुन
अब अर्श दूर तू चल कहीं आराम करते हैं

नज़्म उनवान सवेरा

इस दिल में ग़मों का डेरा है

आंखों में अश्कों का पहरा है

मैं तुम तक चल कर आऊं कैसे

मेरे पांव का ज़ख्म अभी गहरा है

कोई उम्मीद का दिया रोशन तो करो

मेरे चारों ओर अंधेरा है

कहते हैं मुझसे ये लोग अक्सर

हर रात के बाद सवेरा है

इस भरी दुनिया में कोई भी

नहीं है यहां जो मेरा है

मुद्दत से मेरी रूह में देखो

कोई दर्द बनकर ठहरा है

ग़ज़ल

ये सोच कर ही तर्क-ए-ताल्लुक़ किया मैंने
शायद तुझे भी मेरी ज़रूरत नहीं रही
सब पूछते हैं तुझपे ही एतबार क्यों नहीं
तो सुन ले सबकी तुझ में सदाक़त नहीं रही
मैं मुतमइन हूं हाल से अपने अज़ीज़ मन
आंखों में मेरी पहले सी वहशत नहीं रही
तू ढूंढ लेना मुझसा कोई फिर बता देना
उस वक़्त मैं कहूंगी मोहब्बत नहीं रही
मैं बदग़ुमान तुझसे हूं ये क्यों लगा तुझे
लहजे में मेरे जबकि शिकायत नहीं रही
जिस वक़्त अर्श दुनिया से रुखसत हो जाएगी
उस वक़्त तू कहेगा अदावत नहीं रही

नज़्म उनवान मेरे ख्वाबों के जुगनू

मेरे ख्वाबों के सब जुगनू
मेरी आंखों में रहने दो
इन्हें तुम दूर ना करना
मुझे मजबूर ना करना
मेरे भरम को अभी रहने दो
तुम्हें कसम है मुझे ये कहने दो
मुझे क्यों लाए हो यहां
मैंने मांगा था बस सुकून का जहां
सुनो मुझको नहीं गिरना
अभी मुझको नहीं मरना
तुम्हारे साथ जी लूं फिर
तुम चाहे जो करना

ग़ज़ल

मैं हूं अहले मोहब्बत तो मुनाफिक़त भी नहीं आती
किसी को दर्द दे जो उसको राहत भी नहीं आती
जो गुम है इश्क के बाज़ार में मुर्शिद यहां सुन ले
कभी उस नफ़्स परवर को तिजारत भी नहीं आती
शिकस्ता दिल तुझे इस बात का ग़म क्यों है आखिर कि
तेरी तहवील में जो अब मोहब्बत भी नहीं आती

मैं सब की दस्तरस में हो के भी शायद नहीं हूं पर
कभी इस बात पर मुझको नदामत भी नहीं आती
बिका बेदाम है जो शख्स उससे क्या गिला करना
यहां हर शख्स को करनी ही उलफ़त भी नहीं आती
अगर पामाल हो जाए कहीं पर बिन्ते हव्वा तो
कभी उस क़ौम की किस्मत में अज़मत भी नहीं आती
यज़ीदों से कहो इस दौर के अब अर्श की सुन लें ये
कभी इनके नसीबों में शहादत भी नहीं आती

नज़्म उनवान यादें

यादों के गुलदस्ते से
एक फूल चुरा कर देखूंगी
इसमें कितने रंग शामिल हैं
मेरे बेरंग आंसू के
फिर दिल के लहू से मैं
रंग मोहब्बत भर दूंगी
और कुछ ना पूछूंगी दिल की बेरहम चालों से
इस दिल की बंजर ज़मीं पर
एक कोपल अब भी बाकी है
मैं उसको सीचूँगी
अपनी आंहों से दुआओं से
मेरी ख़ामोशी में जो पोशीदा है
इस पैग़ाम को क्या तू समझेगा
मैं इश्क की तहरीर रक़म करूंगी
अर्श अपने बेबस हाथों से

ग़ज़ल

नहीं वो हम किसी के भी जो ख़्वाबों मे मिलेंगे
सुनो हम वक़्त तहरीरों किताबों में मिलेंगे
हों ग़ाफ़िल तुम अगर अपने किसी दुश्मन से तो फिर
तो ढूंढो उन्हें तुमको वो अहबाबों में मिलेंगे
ग़ज़ल दीवान में तुम ना रुबाई में तलाशो
हां ख़ुद में ढूंढो तुमको हम आसाबों मे मिलेंगे
जो तोड़ते दिल किसी का हैं तो सुन लो सच ये है कि
वो सारे लोग ही तुमको अज़ाबों में मिलेंगे
सुनो क्यों पूछते औरत की हक़ीक़त को हो तुम सब
यहां हम ज़ीस्त के हर अबवाबों में मिलेंगे
सुबह और शाम तुम मेरे लिए जो हो भटकते
तो देखो आसमानों में ओक़ाबों में मिलेंगे
नहीं भूलोगे तुम एहसास को मेरे कभी भी
हो करके खुशबू तुमको हम गुलाबों में मिलेंगे
बताओ अर्श इनको कि ये इज़्ज़त पर ना आएं
ये चाहें या ना चाहें हम हिजाबों में मिलेंगे

नज़्म उनवान उदास आंखें

तुमने देखा है कभी क़र्ब उन आंखों का
जिसके अंदर मोजज़न एक समंदर है
जिसमें वहशत नज़र आती अक्सर है
जैसे सुकूत हो सहरा और वीराने में
जैसे मातम हो कहीं पर ज़माने में
बेबसी दूर से उन आंखों में दिखती है
एक खामोशी है उसमें जो बस्ती है
क्या ख़बर तुमको वो रातों को बहुत रोती है
नींद उन आंखों से दूर बहुत होती है
शायद देखीं नहीं तुमने वो उदास आंखें
जिसमें सदियों की है थकन वो एहसास आंखें

ग़ज़ल

बदलते तेरे रंग हम देखते हैं
समझना नहीं हमको कम देखते हैं
दिखावा तेरा दिख ही जाता है मुझको
तेरे सारे अब हम सितम देखते हैं
नहीं अर्श मिट सकते वो लोग हरगिज़
यहां जिनको अहले करम देखते हैं

नज़्म उनवान दास्तान-ए-इश्क़

मैं दास्तान-ए-इश्क़ रक़म करुंगी तेरी आंखों में
फिर अश्क़ बन कर खामोशी से बह जाऊंगी
तुझसे वाबस्ता जज़्बात की शिद्दत क्या है जाना
मैं चंद लफ्ज़ों में तुझसे कह जाऊंगी
तू अपना नाम मुझको ना दे ज़माने में मगर
मैं तेरे दिल के किसी खाने में रह जाऊंगी
ये मेरा वादा है तुझसे ए मेरे तबीब
मैं तेरे वास्ते हर दर्द सह जाऊंगी

ग़ज़ल

तू मेरी रूह की अब गिज़ा बन गया
तेरे बिन अपना अब तो गुज़ारा नहीं
लम्स ये तेरा मुझको है महका गया
जान तू कोई और अब हमारा नहीं
मैंने देखा है सारे जहां को मगर
तुझसा कोई तो दुनिया में प्यारा नहीं
वस्ल में हुस्न का बरसे सावन यहां
बीच तेरे मेरे अब किनारा नहीं
मैं लकीरें भी हाथों की हूं देखती
कोई तकदीर का और सितारा नहीं
अर्श लफ़्ज़ों में कैसे बयां ये करे
तेरे बिन मेरा कोई सहारा नहीं

ग़ज़ल

मुझे बिगड़े हुए हालात से डर लगता है अब
मुझे क्यों अपने ही जज़्बात से डर लगता है अब
हां मैं वहशत-ए-तन्हाई में कर लूंगी गुज़र पर
मुझे हर एक सिसकती रात से डर लगता है अब
किया तूने अहद मुझसे तो पहले भी मगर क्यों
तेरे वादे तेरी हर बात से डर लगता है अब
न उलझा मुझको झूठी इश्क़ की ज़ंज़ीर से तू
मुझे लोगों के अब ख्यालात से डर लगता है अब
मैं तो हूं क़ैद अपने ही उसूलों में कि जैसे
मुझे अपनी ही हर आदात से डर लगता है अब
किसी को मैं नहीं बेचैन कर सकती हूं क्योंकि
मुझे वाल्लाह सुन मकाफ़ात से डर लगता है अब
मैं कैसे अर्श पहरे अब लगाऊं तुझ पे यानी
मुझे हर एक ही एहतयात से डर लगता है अब

नज़्म उनवान हमनवां

मेरे हमनवां मेरी बात सुन
अपनी आंखों में मेरे ख़्वाब बुन
तू दिलासा मुझको दे ज़रा
मेरी पलकों से मेरे अश्क चुन
जिसे सुन के मैं मदहोश हूं
मुझे तू सुना कोई ऐसी धुन
तू कहता है मैं तुझ पर लिखूं
तो बता मुझे क्या किधर लिखूं
मुझे लफ़्ज़ दे मैं इधर लिखूं
और मुझ पर तेरा असर लिखूं
तुझे संगदिल या रहबर लिखूं
या तुझको मैं पत्थर लिखूं

क्या तुझको मैं एक लहर लिखूं
या इश्क की एक भंवर लिखूं
तुझे जादू टोना सहर लिखूं
मैं तुझको ही उम्र भर लिखूं

ग़ज़ल

तेरी आंखों में क्यों सैलाब सा है
हां शायद टूटा कोई ख़्वाब सा है
तुझे सब देखते हैं इसलिए कि
तेरा चेहरा भी तो आफताब सा है
तू मुझसे रूठा है तो सुन ले
मेरा हर लम्हा ही आज़ाब सा है
बताऊं कैसे लहजे में भी तेरे
हमेशा लगता ही रूआब सा है
ये कहते मेरे सब अपने ही मुझसे
है कुछ तो मुझमें जो ओक़ाब सा है
तू आंखों की चमक तो देख मेरी
यहां उम्मीद और असबाब सा है
जो किसी और की है अब हक़ीक़त
वो बस मेरे लिए एक बाब सा है

नज़्म उनवान कहानी

आओ जाना मिल के हम दो एक कहानी लिखते हैं
तुम कोरा कागज़ ले आना फिर ये नादानी लिखते हैं
चलो मिलकर सरहद देखते हैं और लहू की रवानी लिखते हैं
गवाँई जिन्होंने वतन के लिए हम उनकी जवानी लिखते हैं
चलो चलते शहर की उस बस्ती में जहां बच्चों में बेबसी पलती है
हम उन कमसिन बच्चों की आंखों का पानी लिखते हैं
हम दर्द को लफ़्ज़ों में घोलकर फिर अपनी ज़ुबानी लिखते हैं
हम अपने बुजुर्गों की शफकत और मेहरबानी लिखते हैं
किसी की मदद करके मिलती जो वो ख़ुशी अंजानी लिखते हैं
मचा दे तलातुम लोगों में हम ऐसी निशानी लिखते हैं

ग़ज़ल

मैं एहसासात अपने लफ़्ज़ों में कैसे बयां कर दूं
तेरी यादों को भी इस दिल से अब कैसे जुदा कर दूं
ये कहते लोग हैं मैं दर्द ही लिखती हूं क्यों आख़िर
दिखावा लहज़े में शामिल बता कैसे भला कर दूं
वो मुझसे हाल पूछे मेरा तो शायद बताऊं मैं
भला दिल की हक़ीक़त उसपे मैं कैसे अयां कर दूं
नहीं मालूम तेरे हर दर्द की मुझको वजह जाना
तो तेरे ज़ख्मों की आख़िर कहो कैसे दवा कर दूं
ये है इदराक़ मुझको अब बहुत वो दूर है मुझसे फिर
बताओ अर्श उसको पाने की कैसे दुआ कर दूं

नज़्म उनवान बारिश

ये बारिशों की रिमझिम ये मौसम, ये मैंने कभी ना देखा था
हो गई उसके साथ मेरी सांस मद्धम, ये मैंने कभी ना देखा था

उसकी आंखों में जो जज़्बात का शोरीदा समंदर था
हो गई आज मैं उसमें गुम, ये मैंने कभी ना देखा था
उसके साथ वो पुर लुत्फ़ मंज़र मैंने देखा
कि ख्वाब में भी ये आलम, ये मैंने कभी ना देखा था

ग़ज़ल

यूं तेरे इश्क़ में ज़ुल्फ़े संवारी हमने जाना
तेरे बिन ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी हमने जाना
ज़माना ठोकरें जिस वक़्त मुझको देता था सुन
तेरी तस्वीर बस दिल में उतारी हमने जाना
यहां दुनिया की सब रंगीनियां तू देखता था
उसी पल शायरी सारी निखारी हमने जाना

नज़्म उनवान दिल-ए-मुस्तरीब

दिल-ए-मुस्तरीब मेरी बात सुन
ना इधर-उधर की बात कर
ना किसी जगह पर दिल लगा
ना किसी के वास्ते ख़ाक हो
ना तबाह अपना सुकून कर
ना पैदा रगों में जुनून कर
तेरा हक़ भी तेरी ज़ात पर है
इस बात का तू ख़्याल रख
तू ख़ुद से मोहब्बत बेमिसाल कर
जो जा रहा उसे जाने दे
नहीं ख़ुद को तू हलाक़ कर
बस ख़ुद की ही तू फ़िराक़ कर
तेरे वास्ते एक जहां यहां
तू नया जहां दरियाफ्त कर
कोई पूछे तेरा मशगला
तो अपनी ज़ात पे बात कर

ग़ज़ल

हां तुझको मिल गया मेरा ही मुतबादिल मुबारक
है मेरा क़त्ल तुमको भी मेरे क़ातिल मुबारक
ना जिसका कारवां और हो ना कोई आशियाना बनाया तूने
मुझको ऐसा एक बिस्मिल मुबारक था ख़स्सारे मोहब्बत अर्श का
तो मशगला फिर खोकर मुझको मिला जो तुझको वो हासिल मुबारक

नज़्म उनवान तेरे नाम

दिल की गहराइयों से एक पैगाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
मैंने दिल के कागज़ पर लिखा सुबहो शाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
बिन तेरे खुशियां भी हैं गर्दिश अय्याम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
मैं भटक रही हूं इधर-उधर होके गुमनाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
मुझको चाहिए उम्र भर तेरी छांव में आराम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
तेरी दीद की तलब में नींदे हो गई हराम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
मैं कर रही हूं एक खूबसूरत एहतमाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
क्योंकि दिल में है तेरा ख़ास मुक़ाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
मेरी बिंदिया चूड़ी मेहंदी श्रृंगार तमाम
जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम
झुकी है मेरी पलकें करके तेरा एहतराम

जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम

मैं लिखूंगी मोहब्बत का एक खूबसूरत अंजाम

जाने अज़ीज़ सिर्फ तेरे नाम

ग़ज़ल

मैं क्या करूं कि मुझे तुझसे प्यार अब भी है
तेरी वफ़ा का मुझे एतबार अब भी है
आखरी बार हम मिले थे जहां पे लोगों
मेरी वफ़ा का उस जगह मज़ार अब भी है
कोशिशें जारी है तुझको भूल जाने की
पर इन आंखों को तेरा इंतज़ार अब भी है
नहीं कमज़ोर हूँ मजबूर दिल के हाथों मैं
क्योंकि इस दिल को तुझ पे इंहिसार अब भी है
मैं यकीन उसपे भला कैसे करूं अर्श
दिल के टूट जाने के तो आसार अब भी है

नज़्म उनवान खत

उनका खत आया है मुझे भूल जाइए
मैंने जवाबे खत के किनारे जला दिए
बेहिसी का आलम मेरी ना पूछिए जनाब
जो खत में थे मौजूद वो इशारे जला दिए
दिल था के वक़्त रुखसत उन्हें देख आऊं मैं
फिर मैंने हसरतों के अंगारे जला दिए
महबूब की अतात तो लाज़िम थी मुझपे
बस इसलिए जीने के सहारे जला दिए
ये सोच के अर्श मैं मुतमईन हूं
कि मैंने ख्वाब सारे के सारे जला दिए

ग़ज़ल

मुझसे तुम जो बेरुखी का अब सवाल करते हो
है कमाल मेरी जान ये कमाल करते हो
तुमसे बदग़ुमान मैं नहीं फिर न जाने क्यों
खुद को तुम क्यों अब यूं बेवजह बेहाल करते हो
तुम ये एतराफ़ सबके सामने करो ना कि
इश्क़ तुम भी मुझसे जाना लाज़वाल करते हो
मेरे झुमके, चूड़ी, बिंदिया कहां हैं हमसफ़र
सिर्फ हाथों को ही मेहंदी से लाल करते हो
रोज़ आईना भी मुझसे पूछता है इतना क्यों
जब भी देखो अर्श खुद को ही निढाल करते हो

नज़्म उनवान उदास दिल

उदास दिल है वीरान आंखें लबों की रंगत बदल गई है
मेरी ये पलकें झुकी हुई हैं के इनकी आदत बदल गई है
कभी तो आओ के दिल ये संभले के इसकी रौनक़ तुम ही हो जाना
मेरी हर सांस पुकारे तुझको मेरी हक़ीक़त बदल गई है
मैं कब से तेरी फ़िराक़ में हूं कभी तो मुझको क़रार बख्श दे
मेरी खामोशी गवाह है इसकी कि मेरी फ़ितरत बदल गई है

ग़ज़ल

है दिल बहलाने के बहाने बहुत
है मेरे लबों पर तराने बहुत
तू अहवाल मुझसे मेरा पूछ तो
है ग़म ज़िन्दगी में पुराने बहुत
बता तुझको मनसब कहां चाहिए
है दिल की सतह पे भी खाने बहुत
तू किसका यहां हमसफ़र ठहरेगा
सुना है तेरे हैं याराने बहुत
है क्यों आजकल बस्ती में चर्चे ये
सभी कहते मेरे अफ़साने बहुत
तुझे तोहफ़े में मैं भेजूं तो क्या
मेरे पास है अब नज़राने बहुत

ग़ज़ल

मैं लड़की हूं मैं अपने नफ़्स को भी मार सकती हूं
नहीं गुज़रे जहां पर ज़िन्दगी गुज़ार सकती हूं
मुझे अम्मी ने बचपन से सिखाई थी जो क़ुर्बानी
मैं हर रिश्ते पे सुन लो जान मेरी वार सकती हूं
कभी आए मेरे महबूब तुझ पर कोई मुश्किल तो
मैं हर ज़ेवर क़सम है जान की तब उतार सकती हूं
मैं तुझको चाहती कितना नहीं मालूम है तुझको
कभी जो वक़्त आए सांस मैं दे उधार सकती हूं
है ग़म ये अर्श औरत को नहीं समझा कोई अब तक
मैं अपने पर अगर आऊं तो नस्लें सुधार सकती हूं

नज़्म उनवान पहचान

मुझको पढ़ेगा कोई क्या
खुली किताब हूं मैं
हर परिंदे को दूं शिकस्त
वो ओक़ाब हूं मैं
नहीं मालूम किसी को भी
है अर्शिया की हक़ीक़त क्या
नबी के महके गुलशन का
खिलता गुलाब हूं मैं

ग़ज़ल

मेरी मोहब्बतों के हिसार में
कोई लम्हा आके गुज़ार तू
मैं मौसम हूं पतझड़ का
मेरी जिंदगी की बहार तू
है ये ज़िन्दगी का दौर आख़िरी
मुझे चंद सांसे दे उधार तू
हूं मैं वहशतों में घिरी हुई
मुझे दे दे आके क़रार तू
मैं तेरी फिराक में भटक रही
मेरी ईद आके सवांर तू
नहीं अर्श तेरे बिन है कुछ
मेरी नज़्म तू अशार तू

नज़्म उनवान मौसम

हमने देखा था कभी बहारों का मौसम
है अब फ़क़त बारूद-ओ-अंगारों का मौसम
हर तरफ आम क़त्ल ओ ग़ारत है
जिधर भी देखिए तीर-ओ-तलवारों का मौसम
हर तरफ छाई बेहयाई और उरयानी है
अजीब दौर है दिल के बीमारों का मौसम
लुट रही क़ौम की बेटी सरे बाज़ार आए दिन
बढ़ रहा लुटेरों हत्यारों का मौसम
मर रहा गरीब भूख से सड़कों पर
और इनके लिए है बिग बाज़ारों का मौसम
ये बांट देंगे वतन को मज़हब के नाम पर
नहीं चाहिए हमको अब गद्दारों का मौसम
हर तरफ छाई लूटमारी है बेपनाह
काश आ जाए फिर इमानदारों का मौसम
दे खुदा अमन इस सरज़मीन को ता अब्द
हम हमेशा ही देखें खूबसूरत नज़ारों का मौसम

नज़्म वतन से इश्क़

ये मुल्क हमारा है और हम इसकी शान हैं
वतन से इश्क़ हमारी पहचान है
हमारे लहू में जज़्बा-ए-ईमान है
यहां की मिट्टी हमारी आन है
तुम हमको फ़क़त मुसलमान मत समझो
हम हिंदुस्तान के और हमारा हिंदुस्तान है

हमारी जड़ों को कौन आख़िर मिटाएगा
है खुशबू हमारी इस वतन की हवाओं में

तू ही जन्नत, तू ही मन्नत, तू ही मसकन, तू ही मेरा चमन
ए जाने अज़ीज़ जाने दिल तू मेरा प्यारा वतन
तेरी हवाओं में होना है मुझको तहलील
तेरी मिट्टी में ही मुझको होना है दफ़न
तू मेरा प्यारा वतन